आगरा घराने की लुप्तप्रायः त्रिवट गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन

दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय), दयालबाग, आगरा, से

संगीत विषय में पीएच डी. की उपाधि हेतु शोध प्रबंध की

प्रस्तावित रूपरेखा

शोधार्थिनी

रागिनी

शोध निर्देशिका

प्रो. सुधा सहगल

संगीत (गायन)

संगीत विभाग, कला संकाय
दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग आगरा- 282005

2022

भूमिका -

आगरा घराना शास्त्रीय संगीत के व्योम में दैदीप्यमान प्रकाशपुंज की भांति स्थापित है, इस घराने की कीर्ति इसमें निर्वाहित गायन शैलियों पर आधारित है। साथ ही साथ इस घराने के कलाकारों के अथक परिश्रम, कलात्मक सोच, वृहद सृजनात्मकता तथा स्वर विन्यासपूर्ण कला सौष्ठव ने इस घराने को सर्वोच्च श्रेणी में स्थापित किया है। इस घराने की प्रचलित गायन शैलियों में ध्रुपद, धमार, तराना, बोल-बांट ठुमरी है जबकि कतिपय गायन शैलियां ऐसी हैं जो विभिन्न कारणों से लुप्तप्रायः हो गयी हैं। जो गायन शैलियां लुप्त प्रायः हो रही हैं उनमें सादरा, बोल-बांट ठुमरी तथा चतुरंग गायन शैलियां हैं। जबकि इस घराने की त्रिवट गायन शैली में विभिन्न रचनायें एवं बंदिशें रची गयी हैं जिनमें ख्याल का सौन्दर्य, सरगम अथवा आंशिक काव्य तराने के बोलों का नवीनतापूर्ण प्रयोग तथा पखावज/मृदंग के चमत्कारपूर्ण बोलों के प्रयुक्तिकरण में सम्मिलित हैं। इतने विशिष्ट अवयवों से समृद्ध आगरा घराने की त्रिवट गायन शैली अप्रयुक्तिकरण के कारण सांगीतिक समाज में घरानेदार परिप्रेक्ष्य में तथा शैक्षणिक संस्थाओं में अत्यंत प्रभावशाली होने के बावजूद कोई विशेष स्थान न पा सकी तथा लुप्तप्रायः हो गई।

त्रिवट एक शास्त्रीय संगीत प्रधान गायन शैली है जिसमें स्थाई तथा अन्तरे के साधारणतया दो भाग होते हैं जिसमें क्रमशः सरगम अथवा आंशिक काव्य, तराना तथा पखावज/मृदंग के बोल प्रयुक्त किये जाते हैं। इसे 'फरमायशी बंदिश' भी कहा जाता है जिसे गायक कलाकार प्रस्तुति के अन्त में प्रस्तुत करते हैं। यह गायन शैली वस्तुतः चमत्कारिक है जिसमें तीन शैलियों का समावेश होता है और तीनों ही शैलियां जैसे सरगम अथवा आंशिक काव्य, तराना (नोम तोम बोल) तथा पखावज/मृदंग के क्रियात्मक बोलयुक्त होकर त्रिवट गायन शैली को अत्यन्त समृद्ध बनाती हैं। एक ही रचना में तीन गायल शैलियों का एक सूत्र में बंधना इसके स्वरूप में चार चांद लगा देता है किंतु आश्चर्य है, वर्तमान में यह समृद्ध गायन शैली लगभग लुप्तप्रायः है तथा इसके उत्थान हेतु किसी भी प्रकार अधिक सोचा नहीं गया जबकि आगरा घराने में रचना निर्माण के सन्दर्भ में इस गायन शैली में सराहनीय प्रयास किये गए।

आगरा घराने के सभी चोटी के कलाकारों द्वारा त्रिवट गायन शैली में व्यापक रचनात्मक कार्य किया गया है जिनमें से उस्ताद फैयाज खां, उस्ताद तसद्दुक हुसैन खां, विलायत हुसैन खां, इनायत हुसैन खां प्रसिद्ध हैं। इन शीर्षस्थ कलाकारों ने अनेक रागों व विविध तालों में त्रिवट की अभूतपूर्व रचनाएं कीं। शोधकर्त्री द्वारा कतिपय घरानेदार कलाकारों से साक्षात्कार में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर में ज्ञात हुआ कि सम्भवतः लोकरूचि के अभाव में, मंचप्रदर्शन के अभाव में, तथा अन्य गायन शैलियों को प्राथमिकता दिये जाने के कारण यह गायन शैली प्रकाश में न आ सकी, जिसे उजागर करना शोधकर्त्री का अत्यंत महत्वपूर्ण प्रयास होगा।

आगरा घराने की त्रिवट गायन शैली पर शोध कार्य करने से पूर्व सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण तथा अध्ययन किया गया जो इस प्रकार है -

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण एवं अध्ययन -

पुस्तकें :

- आगरा घराना परम्परा, गायकी और चीजें ; मेहता रमणलाल, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, सेल्स यूनिट, बड़ौदा, द्वितीय आवृति, मार्च 1993
- उत्तर भारतीय संगीत की प्रमुख शैलियों एवं बंदिशों का आधार स्वरूप, ज्योतिषी, आनंद कृष्ण, एसोसिएटिड पब्लिसिंग हाऊस, ब्लॉक-77, संजय प्लेस, आगरा।
- संगीत शास्त्र ; के0 वासुदेव शास्त्री ; प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, 1958
- आगरा घराना: परम्परा व बंदिशें ; पं0 यशवंतबुवा महाले, संस्कार प्रकाशन।
- शास्त्रीय संस्कृति - आगरा घराना भाग 1-2, संस्कृति मंत्रालय, उत्तर प्रदेश
- राग विशारद ; डा0 लक्ष्मी नारायण गर्ग ; संगीत कार्यालय, हाथरस ; 2005
- ख्याल गायकी में विविध घराने ; डा0 शन्नो खुराना ; सिद्धार्थ पब्लिकेशन्स ; दिल्ली, 1995
- भारतीय संगीत परम्परा वंशानुक्रम एवं वातावरण, गोस्वामी, डॉ**0** हरीकिशन, कनिष्क पब्लिकेशन, नई दिल्ली 11002

- Indian Classical music and gharana trade on ; Mehta, R.C. Roadworthy Publication Baroda : 1991

शोध प्रबन्ध :

- भारतीय संगीत में आगरा घराने का योगदान का ऐतिहासिक अध्ययन ; बोस, बर्नाली ; दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट - 1997
- उत्तर भारतीय संगीत के ख्याल गायन की समृद्धि में कुछ एक प्रमुख आधुनिक वाग्येकारों का सांगीतिक योगदान ; ग्रोवर नीरा SNDT Women & University-1998
- आगरा घराने का भारतीय संगीत में सृजनात्मक योगदान; केलकर, राजेश, गोपालराव, महाराजा, सयाजीराव यूनिवर्सिटी, बड़ौदा - 2015
- आचार्य एस0 एन0 रातनजनकर का आगरा घराने में योगदान; सेवक, जय अरूनकान्त, सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी - 2011
- उत्तर भारतीय संगीत में शास्त्रीय गायन की विविध गायन शैलियों का क्रमिक विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन; खरे, श्वेता, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी-2020
- हिन्दुस्तानी संगीत मे गायन के विविध घरानों का समीक्षात्मक अध्ययन; डॉ0 स्वपना चौधरी; इलाहाबाद विश्वविद्यालय - 1995
- भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन शैलियों का क्रमिक विकास; सीमा श्रीवास्तव; इलाहाबाद विश्वविद्यालय - 2001
- आगरा घराने की तराना गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन; डा0 सोनल कौशिक, दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, आगरा - 2018

लघु शोध प्रबन्ध :

- आगरा घराने की बोलबॉट ठुमरी - एक विश्लेषणात्मक अध्ययन; शर्मा चंचल, दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, आगरा वर्ष - 2010

- आगरा घराने का सादरा गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन; सत्संगी अर्षा, दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, आगरा - 2015

शोध पत्र :

- भारतीय शास्त्रीय संगीत और घराना परम्परा; सुवर्णलता शर्मा Journal of Indian Musicological Society 2009; Page No 267, 268 & 274, Mumbai, Baroda
- ख्याल गायन शैली; विकसित आयाम; शर्मा सत्यवती, पंचशील प्रकाशन, जयपुर राजस्थान, ISBN No. 81-7056-009-3,1994
- भारतीय संगीत में ध्रुपद गायन शैली से ख्याल गायन शैली का विकास एक अध्ययन: सहस्त्रबुद्धे स्मिता, नई दिल्ली, Department of culture Ministry of Human resource and Develop, Govt. of India, Classical on No. 782-02954, item No. SAH B 2002
- घराने की परम्परा और हिन्दुस्तानी संगीत में इसका महत्व, महुआ रॉय, रवीन्द्र भराली, Page No. 20 The Tripura University Research Journal, Dec 2020

पत्र पत्रिकाए :

- संगीत कला विहार जून 1994, डॉ वीणा सहस्त्रबुद्धे पृष्ठ संख्या 7 तराने का अन्य गीत शैलियों, वादन एवं नृत्य से संबंध
- संगीत कला विहार आर्टीकल अगस्त 1993 डॉ वीणा सहस्त्र बुद्धे पृष्ठ सं 11 तराने की उत्पत्ति स्वरूप एवं मर्यादा
- The Learn quest Annual Magazine Article, The Agra Gharana, Nagarakar, Samarth 2017
- Sahapedia Published, The Agra Gharana of Hindustani, Rao N. Jayavan 2016

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन का सार-औचित्य -

सम्बन्धित साहित्य की वृहद अध्ययन करने के पश्चात शोधकर्त्री को यह ज्ञात हुआ कि त्रिवट गायन शैली पर कोई लिखित अथवा टंकित सामग्री नहीं है तथा शोध के क्षेत्र में तो त्रिवट गायन शैली पर कोई कार्य नहीं हुआ

है। यदि सम्बन्धित साहित्य प्राप्त होता है तो केवल आगरा घराने के सन्दर्भ में ही प्राप्त होता है तथा वृहद जानकारी भी इतिहास, गायकी व कलाकारों के विषय में प्रमुख रूप से निम्न साहित्य में प्राप्त होती है -

- आगरा घराना परम्परा, गायकी और चीजें - प्रो0 रमणलाल मेहता
- ख्याल गायकी में विविध घराने - डॉ0 शन्नो खुराना
- भारतीय संस्कृति: आगरा घराना भाग 1-2, संस्कृति मंत्रालय

त्रिवट गायन शैली पर किसी भी प्रकार वृहद सूचनाओं व जानकारी का नितान्त अभाव है। यदि कहीं पर त्रिवट गायन शैली का उल्लेख प्राप्त होता भी है तो केवल एक या दो गद्यांशों के स्वरूप में ही प्राप्त होता है। कहने का तात्पर्य है कि सम्बन्धित साहित्य त्रिवट गायन शैली पर नगण्य है अतः आगरा घराने की त्रिवट गायन शैली को गहनता से जानने के लिए, इसके अन्तर्गत प्रयुक्त होने वाले सैद्धान्तिक व क्रियात्मक तत्वों का वृहद अध्ययन करने के लिए, त्रिवट रचनाओं में निहित कला वैशिष्ट्य का सूक्ष्म निरीक्षण करने हेतु तथा गायन की छात्रा होने के कारण इस शैली को सीखने की दृष्टि से निम्न विषय का चयन किया गया है -

विषय कथन :

"आगरा घराने की लुप्तप्रायः त्रिवट गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

शोध में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

घराना -

(सं.पु.एक.व.) वंश, खानदान, कुल आदि,

- वर्धा, हिन्दी शब्दकोश - श्री राम प्रकाश सक्सेना

(सं, हिन्दी पु,) वंश, कुल,

- आदर्श, हिन्दी शब्दकोश - श्री राम चन्द्र पाठक

लुप्तप्रायः -

लुप्त: लु कृ (सं लुप) (छेदन) क्त ,

-जो अन्तर्निहित हो या छिप गया हो जिसका लोप हो गया हो।

- मानक हिन्दी कोशः - राम चन्द्र वर्मा,

प्रायः - वि. सं, लगभग, करीब करीब,

- विक्शनरी Online हिन्दी, शब्दकोश।

त्रिवट -

सं.पु.- तीन भागों वाली सांगीतिक गायन शैली जिसमें सरगम, तराना व मृदंग /पखावज के बोल निहित हों। अन्य अर्थों में कदाचित पहले भाग में आंशिक काव्य का प्रयोग भी हो सकता है।

गायन शैली -

स्त्रीलिंग (संगीत गायन) गायन विधा का पूरा ज्ञान, गाने की क्रिया या भाव।

- लोक भारतीय प्रामाणिक हिन्दी शब्दकोश - आचार्य रामचंद वर्मा

विश्लेषणात्मक -

(वि.पु.) विश्लेषण + आत्मक; तत्वसंधान, परीक्षण, वर्णन

- हिन्दी शब्दकोश- डॉ0 हरदेव बाहरी

अध्ययन के उद्देश्य :

- आगरा घराने का इतिहास एवं उसके विभिन्न कलाकारों के विषय में अध्ययन करना
- आगरा घराने की लुप्तप्रायः त्रिवट गायन के विभिन्न तत्वों को खोजना एवं संगृहीत करना
- आगरा घराने की त्रिवट गायन शैली के सैद्धान्तिक पक्ष का अध्ययन करना
- आगरा घराना की त्रिवट गायन शैली के क्रियात्मक पक्ष का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना
- वर्तमान में त्रिवट गायकों से साक्षात्कार कर जानकारी प्राप्त करना
- त्रिवट गायन शैली की विभिन्न ध्वन्यांकित सामग्री का संकलन करना
- त्रिवट गायन शैली का गहन अध्ययन कर इसमें स्वरचित रचनाओं को समक्ष लाना

अध्ययन की आवश्यकता :

त्रिवट एक विशिष्ट गायन शैली है, जिसमें तीन भागों का समावेश होता है। प्रायः रचनाकार तीनों भागों को अपनी स्वेच्छा से रचित कर सकता है जैसे-(तराना, सरगम, पखावज/मृदंग के बोल) तथा आगरा घराने में इस गायन शैली पर अनेक रचनात्मक कार्य किये गये किन्तु कालान्तर में यह गायन शैली लुप्तप्रायः हो गयी। अतः इस गायन शैली को संगीत एवं शिक्षा जगत में प्रकाश में लाने की आवश्यकता है जिससे संगीत मर्मज्ञों तथा विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को लाभ हो सकेगा।

अध्ययन का महत्व :

प्रस्तावित शोध के माध्यम से त्रिवट गायन शैली को उजागर कर, इसमें निहित विशिष्ट सांगीतिक तत्वों को प्रकाश में लाकर आगरा घराने की अप्रकाशित रचनाओं को उद्घाटित करना इस शोध का महत्व सिद्ध करेगा। विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए भी प्रस्तावित शोध महत्वपूर्ण सिद्ध होगा क्योंकि भविष्य में उन्हें त्रिवट गायन शैली के साथ-साथ आगरा घराने मूर्धन्य कलाकारों की विशिष्ट सृजनात्मक शैली को जानने का अवसर प्राप्त होगा।

विषय परिसीमांकन :

कार्य एवं समय की सीमा को देखते हुये प्रस्तावित शोध अध्ययन को आगरा घराने के पांच त्रिवट कलाकारों तथा आगरा घराने की दस त्रिवट रचनाओं एवं दस स्वरचित रचनाओं तक ही सीमित रखा जाएगा।

कार्यविधि एवं उपकरण :

प्रस्तावित शोध हेतु सर्वेक्षणात्मक व व्याख्यात्मक प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा तथा विभिन्न पुस्तकालयों, संस्थाओं तथा अकादमियों से सामग्री प्राप्त की जाएगी। इस क्षेत्र के कलाकारों, विद्वानों तथा लेखकों द्वारा साक्षात्कार के आधार पर जानकारी प्राप्त हो जायेगी। रेडियो, टी0 वी व इंटरनेट के माध्यम से भी सूचनायें एकत्रित की जाएगी। विभिन्न रिकॉर्डिग (Recording) अथवा ध्वन्यांकित सामग्री का प्रयोग भी किया जाएगा।

शोध उपकरणों में प्रश्नावली, अनुसूची, निर्धारण मापनी का प्रयोग किया जाएगा तथा अन्य उपकरणों जैसे - सी0 डी0, वीडिया केमरा, कम्प्यूटर आदि का प्रयोग किया जाएगा।

अध्यायों का विभाजन :

प्रथम अध्याय - आगरा घराने का इतिहास एवं गायकी

द्वितीय अध्याय - त्रिवट गायन शैली: परिचय, इतिहास व विभिन्न तत्व

तृतीय अध्याय - आगरा घराने के प्रमुख त्रिवट कलाकार एवं रचनाएं

चतुर्थ अध्याय - आगरा घराने की त्रिवट रचनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन

पंचम अध्याय - (i) विभिन्न स्रोतों द्वारा आगरा घराने की त्रिवट रचनाओं का संकलन

(ii) शोधकर्त्री द्वारा निर्मित त्रिवट रचनाओं का संकलन

निष्कर्ष -

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

रूपरेखा निर्मित करने से पूर्व विभिन्न कलाकारों/विद्वानों से पूछे गये प्रश्न

प्रश्नावली

- आगरा घराना कितना पुराना है ?
- आगरा घराने में कौन-कौन सी गायन शैलियां प्रचार में नहीं हैं ?
- आगरा घराने का प्रादुर्भाव कहां से हुआ ?
- आगरा घराने के प्रवर्तक कौन है ?
- आगरा घराने की गायकी की विशेषताएं क्या हैं ?
- आगरा घराने के आधुनिक कलाकार कौन कौन से हैं ?
- त्रिवट गायन शैली क्या है ?
- त्रिवट गायन शैली का इतिहास क्या है ?

- त्रिवट गायन शैली को प्रचलित बनाने में आगरा घराने के कलाकारों का क्या योगदान है ?
- त्रिवट गायन शैली का आगरा घराने में क्या स्थान है ?
- त्रिवट की रचनाओं के निर्माण में कौन से तत्वों को ध्यान में रखा जाता है ?
- त्रिवट गायन शैली का प्रयोग किस प्रकार किया जाता है ?
- त्रिवट गायन शैली का प्रयोग किस लय में किया जाता है ?
- त्रिवट गायन शैली में कौन-कौन सी तालों का प्रयोग होता है ?
- त्रिवट गायन शैली का प्रयोग आगरा घराने के संदर्भ में किस प्रकार किया जाता है ?
- त्रिवट के तीन भागों को कौन से क्रम में लगाया जाता है ?
- क्या त्रिवट के तीनों भागों को रचना में कठोरता से नियमबद्ध किया जाता है अथवा किसी भी भाग को किसी भी क्रम में स्थापित किया जा सकता है ?

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

पुस्तकें:

- आगरा घराना परम्परा, गायकी और चीजें ; मेहता रमणलाल, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, सेल्स यूनिट, बड़ौदा, द्वितीय आवृत्ति मार्च 1993
- उत्तर भारतीय संगीत की प्रमुख शैलियों एवं बंदिशों का आधार स्वरूप ; ज्योतिषी, आनंद कृष्ण, एसोसिएडिड पब्लिसिंग हाउस, ब्लॉक-77, संजय प्लेस, आगरा।
- भारतीय संगीत परम्परा वंशानुक्रम एवं वातावरण ; गोस्वामी, डॉ0 हरीकिशन, कनिष्क पब्लिकेशन, नई दिल्ली 11002
- संगीत शास्त्र; के0 वासुदेव शास्त्री; प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश 1958
- आगरा घराना; परम्परा व बंदिशें, पं0 यशवंतबुवा महाले; संस्कार प्रकाशन
- भारतीय संस्कृति-आगरा घराना भाग 1-2, संस्कृति मंत्रालय उत्तर प्रदेश

- राग विशारद; डा0 लक्ष्मी नारायण गर्ग; संगीत कार्यालय हाथरस, 2005
- ख्याल गायकी में विविध घराने; डा0 शन्नो खुराना; सिद्धार्थ पब्लिकेशन, दिल्ली 1995
- संगीत चिंतन प्रथम खण्ड ; डॉ0 सौभाग्य वर्धन वृहस्पति अभिषेक पब्लिकेशन्स 2004
- संगीत मीमांशा ; डॉ0 मृदुलापुरी, सत्यम पब्लिशिंग हाउस, प्रथम संस्करण-2007
- Indian Classical music and gharana tradi on, Mehta, R.C. Roadworthy Publication on Baroda, 1991

शोध प्रबन्ध :

- भारतीय संगीत में आगरा घराने का योगदान का ऐतिहासिक अध्ययन ; बोस, बर्नाली, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, 1997
- उत्तर भारतीय संगीत के ख्याल गायन की समृद्धि में कुछ एक प्रमुख आधुनिक वाग्येकारों का सांगीतिक योगदान ; ग्रोवर नीरा, SNDT Womens University - 1998
- आगरा घराने का भारतीय संगीत में सृजनात्मक योगदान ; केलकर, राजेश, गोपालराव, महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी, बड़ौदा-2015
- आचार्य एस0 एन0 रातनजनकर का आगरा घराने में योगदान ; सेवक, जय अरूनकान्त, सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी 2011
- भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन शैलियों का क्रमिक विकास ; सीमा श्रीवास्तव, इलाहाबाद विश्वविद्यालय 2001
- हिन्दुस्तानी संगीत में गायन के विविध घरानों का समीक्षात्मक अध्ययन ; डॉ0 स्वपना चौधरी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय 1995
- उत्तर भारतीय संगीत में शास्त्रीय गायन की विविध गायन शैलियों का क्रमिक विकास का विश्लेषणात्मक अध्ययन, खरे, श्वेता, इलाहाबाद, यूनिवर्सिटी 2020

- आगरा घराने की तराना गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन ; डा**0** सोनल कौशिक, दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, आगरा 2018

लघु शोध प्रबन्ध :

- आगरा घराने की बोलबॉट ठुमरी - एक विश्लेषणात्मक अध्ययन ; शर्मा चंचल, दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, आगरा वर्ष 2010
- आगरा घराने का सादरा गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन, सत्संगी अर्षा, दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, आगरा 2015

शोध पत्र :

- भारतीय शास्त्रीय संगीत और घराना परम्परा, सुवर्णलता शर्मा Journal of Indian Musicological Society 2009, Page No 267, 268, 274, Mumbai, Baroda
- ख्याल गायन शैली; विकसित आयाम; शर्मा सत्यवती, पंचशील प्रकाशन, जयपुर राजस्थान, ISBN No. 81-7056-009-3,1994
- भारतीय संगीत में ध्रुपद गायन शैली से ख्याल गायन शैली का विकास एक अध्ययन: सहस्त्रबुद्धे स्मिता, नई दिल्ली, Depeartment of culture Ministry of Human resource and Develop, Govt. of India, Classical on No. 782-02954, item No. SAH B 2002
- घराने की परम्परा और हिन्दुस्तानी संगीत में इसका महत्व, महुआ रॉय, रवीन्द्र भराली, Page No. 20 The Tripura University Research Journal, Dec 2020
- 'घरानों का संगम, मिश्रा पं0 श्यामदास, संगीत कला बिहार, अंक 8, अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मण्डल प्रकाशन, 2011
- आगरा घराना, भाग 1 CCRT NEW DELHI
- आगरा घराना, भाग 2 CCRT NEW DELHI